भव्य दीक्षा समारोह सम्पन्न

सन्यास को पाना अनन्तकाल की उपलब्धि

– आचार्य महाश्रमण

राजलदेसर, 6 फरवरी। युवा भारती स्टेडियम में रविवार को आयोजित जैन दीक्षा समारोह में आचार्य महाश्रमण ने हजारों लोगों की उपस्थिति में मुमुक्षु अरविन्द लूणिया एवं जैन वि व भारती विश्वविद्यालय की निवर्तमान कुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा सहित छः समणीवृन्द को जैन दीक्षा प्रदान की। सुबह 9:15 बजे भुरू हुए कार्यक्रम में 'करेमि भंते' के पाठ का उच्चारण होने के साथ ही दीक्षार्थियों को जीवनपर्यन्त सर्व सावद्य योग का त्याग करवाया। आचार्य प्रवर ने कहा दीक्षा एक सौभाग्य का विशय है जो किसी–किसी को मिलता है, वह सौभाग्य आज अरविन्द लूणिया को प्राप्त हो रहा है और समणियों को संयमपथ पर आगे बढने का अवसर मिल रहा है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि मनुश्य जन्म से ज्यादा दुर्लभ है संयम जीवन। दीक्षा व्यक्ति का दूसरा जन्म है। इस दूसरे जन्म में संयमपूर्वक सारी गतिविधियां संचालित होती है। उन्होंने नव दीक्षित मुनि को प्रथम सम्बोध प्रदान करते हुए कहा कि अब तुम गृहस्थ नहीं हो, साधु बन गए हो। साधु का जीवन साधनामय होना चाहिए। चलना, खड़ा होना, बैठना, सोना, खाना और बोलना, सभी काम संयम पूर्वक करना है। कशाय मंदता का ध्यान देना है, सहन करने की क्षमता का विकास करना है। उन्होंने कहा कि अच्छा साधु बनने का लक्ष्य बनाओं जिससे स्वयं का, तेरापंथ भाासन और संसारपक्षीय घर–परिवार का गौरव बढेगा। उन्होंने भावितात्मा बनने की प्रेरणा दी। समणी से श्रेणी आरोहण कर साध्वी जीवन में प्रवे ा लेने वाली साध्वियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा ''तुम तो पहले से ही संयम जीवन को जी रही हो परन्तु अब यह जीवन साधु– जीवन है। साधु–जीवन में पूर्ण जागरुक रहना होगा।''

आचार्य महाश्रमण ने उपस्थित जनमेदिनी से संयमित जीवन चर्या बनाने का आह्वान करते हुए कहा कि सन्यास आ जाए तो अनन्तकाल की उपलब्धि हो जाती है। प्रत्येक व्यक्ति ऐसा कर पाए यह संभव कम है फिर भी गृहस्थ जीवन संयमी बने, यह अपेक्षित है।

गुरु द्वारा दीक्षार्थी की परीक्षा

आचार्य महाश्रमण ने दीक्षार्थी अरविन्द लूणिया को दीक्षा देने से पूर्व सभी पारिवारिक जनों से लिखित एवं मौखिक आज्ञा ली। उसके बाद दीक्षार्थी की ओर मुखातिब होते हुए उन्होंने कहा कि तुम अभी भी सोच सकते हो, अभी केवल वे ा परिवर्तन हुआ है। कहीं मन में दीक्षा न लेने का भाव हो तो पुनः सोच सकते हो क्योंकि यह नानी का घर नहीं है। दीक्षा के बाद एक गुरु के अनु ाासन में रहना होगा। बड़ों के अनु ाासन में रहना होगा। सभी के चेहरे पर संतोश की लकीरें झलक रही थी। दीक्षार्थी ने गुरु की ओर से ली गई परीक्षा में उत्तीर्ण होते हुए दीक्षा की दृढ़ इच्छा जताई। तब आचार्य महाश्रमण ने दीक्षा प्रत्याख्यान करवाया।

केशलोच संस्कार

आचार्य महाश्रमण ने नवदीक्षित मुनि का के ालोचन संस्कार सम्पन्न करते हुए कहा कि ि ाश्य की चोटी गुरु के हाथ में रहनी चाहिए। इसलिए आज के ालोच संस्कार के जरिए

चोटी गुरु के हाथों में आ रही है। साध्वियों की चोटी साध्वी प्रमुखाजी के माध्यम से मेरे पास आएगी। साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने नवदीक्षित साध्वियों का के ालोच संस्कार सम्पन्न किया।

नामकरण संस्कार

आचार्य महाश्रमण ने नवदीक्षितों का दीक्षा के बाद हुए नए जन्म का नामकरण संस्कार सम्पन्न करते हुए सबको नए नाम प्रदान किए। उन्होंने मुमुक्षु अरविन्द को मुनि आर्जव कुमार, समणी मंगलप्रज्ञा को साध्वी मंगलप्रज्ञा, समणी ऋतुप्रज्ञा को साध्वी ऋद्धिय ा, समणी विधिप्रज्ञा को साध्वी विपुलय ा, समणी सम्प्रतिप्रज्ञा को साध्वी सम्यक्त्वय ा, समणी मयंकप्रज्ञा को साध्वी मयंकय ा, समणी समाधिप्रज्ञा को साध्वी समाधिय ा नाम प्रदान किये।

अहिंसा का प्रतीक रजोहरण प्रदान किया

आचार्य महाश्रमण ने अतीत का प्रतिक्रमण कराने के बाद नवदीक्षित मुनि एवं साध्वियों को आगम वाणी के माध्यम से ज्ञान–द ान–चरित्र में वर्द्धमान होने का आ ीर्वाद देते हुए श्रीडूंगरगढ निवासी अरविनद लूणिया को अहिंसा का प्रतीक रजोहरण प्रदान किया और नवदीक्षित साध्वियों को साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा को रजोहरण प्रदान करने की अनुमति दी।

दीक्षा लेने तक की भावना को किया व्यक्त

दीक्षा संस्कार से पूर्व नमस्कार महामंत्र से भुरू हुए जैन दीक्षा समारोह में मुमुक्षु अरविन्द लूणिया ने अपनी सात वर्शों से लेकर आज तक की वैराग्य–भावना को व्यक्त करते हुए गुरु इंगित आराधना करते रहने की भाक्ति प्रदान करने की याचना की। जैन वि व भारती वि वविद्यालय की पूर्व कुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा ने अपने 27 वर्शों के साधना जीवन का वर्णन करते हुए कहा – जीवन का प्रत्येक क्षण और प्रत्येक दिन ज्ञान के प्रका ा से प्रका ित होता रहे। समणी ऋतुप्रज्ञा, समणी विधिप्रज्ञा, समणी सम्प्रति प्रज्ञा, समणी मयंक प्रज्ञा, समणी समाधिप्रज्ञा ने भी अपने विचार प्रकट करते हुए अपने आपको गुरु भारण में समर्पित किया एवं साधना के मार्ग में उत्तरोत्तर विकास का आ ीर्वाद मांगा। पारमार्थिक ि ाक्षण संस्था की मुमुक्षु मर्यादा ने अरविन्द लूणिया का परिचय प्रस्तुत किया। समणी प्रतिभाप्रज्ञा ने समणीवृन्द का परिचय दिया।

पारमार्थिक ि ाक्षण संस्था के संयोजक कन्हैयालाल छाजेड़ ने मुमुक्षु अरविन्द की दीक्षा के आज्ञा पत्र का वाचन किया एवं पिता हनुमानमल लूणिया आदि पारिवारिकजनों ने आज्ञापत्र आचार्य महाश्रमण को भेंट किया। समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा ने समणश्रेणी के ऐतिहासिक पहलुओं पर प्रका ा डालते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी अणिमाश्री, मुनि कि ानलाल, मुनि धन¥जय कुमार, मर्यादा–महोत्सव प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष पन्नालाल बैद आदि ने भी अपने विचार प्रकट किए। इस अवसर पर आमेट मर्यादा–महोत्सव का आमन्त्रण पत्र जारी किया गया। समारोह में गुरुदेव ने अ. भा. ते. यु. प. द्वारा जारी बारह व्रत कैलेण्डर का विमोचन किया। कैलेण्डर विमोचन के अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिशद् के अध्यक्ष गौतम डागा, संयोजक गुलाबचन्द डागा (सरदार ाहर–बैंगलोर), राजे ा चावत (भीम–बैंगलोर), ते.यु.प., राजलदेसर के अध्यक्ष रजत बैद व मंत्री सु ील घोशल उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

नवदीक्षितों को मिला आध्यात्म का ओज आहार

दीक्षा समारोह स्थल से नाहर भवन में पधारने के बाद आचार्य महाश्रमण ने नवदीक्षितों को अध्यात्म का ओजआहार प्रदान किया।

आचार्य प्रवर ने कहा कि यह भी एक संस्कार है, जो नवदीक्षित को गुरु से मिली मांगलिक वस्तु अध्यात्म मार्ग पर निर्वाह गति से बढने की ऊर्जा प्रदान करती है।